

DPN 6241

Title : ~~कौमार्यचरनविधि~~ / KAUMĀRYARCANA VIDHI

Run. No. 6932

Cat. No. 48

Micro. No.

Subject ~~तान्त्रिक कर्मकाण्ड~~
Tāntrika ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 28.8 X 11

Folios 2

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : mantra monogram

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : इति श्री कौमार्यचरनविधिः समाप्तः ॥

ॐ नमो भगवते ॥ आत्मानं नैव वदन्त्यात्मा ॥ कथां न्यासमात्रं न ॥ ॐ नैव ज्ञोतीति ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॐ अकारं
 दयाय नमः ॥ ॐ अकारं शिवसंस्मृता ॥ ॐ अकारं शिखायै वीषट् ॥ ॐ अकारं कवचाय दू ॥ ॐ अकारं भगवती वषट्
 ॥ ॐ अकारं श्री कृष्णाय नमः ॥ नानार्थपारुषं संप्रदायं पूज्यं कथयन् ॥ नानाध्यानं ॥ ॐ अकारं मन्त्राय नमः
 रा कोमारी वक्रलावनी ॥ वक्रवर्णधारी दवी ॥ उवादाति मन्त्राणि ॥ नृकवक्रावदुर्वाहः ॥ गच्छन्
 विन्दुमूढया ॥ वक्रमात्रासनी दवी ॥ मृगमालाविह्वलिनी ॥ पुण्यागदुर्गसंस्मृता ॥ कोमारी विश्व
 मूषिणी ॥ सर्वभक्तिकरी नित्यं सर्वदुर्भितनाशिनी ॥ ॐ अकारं वक्रं उरुं उरुं ॥ ॐ अकारं मातिका विश्वपाद
 कां पूजयामि ॥ आत्मनश्चानपूर्यन्तमः ॥ ॥ स्फुटितपूजनं ॥ ॐ अकारं मन्त्राय नमः ॥ या पू ॥
 ॐ अकारं वदकां श्री गुरुं स्मृता ॥ ॐ अकारं श्री गुरुं वदकनाथाय या पू ॥ ॐ अकारं दयाय नमः ॥
 ॐ अकारं शिवसंस्मृता ॥ ॐ अकारं शिखायै वीषट् ॥ ॐ अकारं कवचाय दू ॥ ॐ अकारं भगवती वषट् ॥

जयास्तुती
धीमासुनवदु॥

कोमा

ॐ जं वै अमुय रुद ॥ ॐ जं धौ धौ पाताल दीपतस्तुता दवी धीं रुद रुपा लायवलि गृह्णस्वा
हा ॥ ॥ तताम धौ सको मानी वै पूजा ॥ ॐ जं को को को को ताउनी ॥ ॥ ॐ जं अवन वैवका धौ
नमः पायू ॥ वक्र न धौ ॥ १ ॥ ॐ जं अकवर्ग ममाह ध्वय नमः पायू ॥ न रुया ॥ २ ॥ ॐ जं व
वर्ग के को मा धौ नमः पायू ॥ कर्ग या ॥ ३ ॥ ॐ जं ववर्ग वैवेषू धौ नमः पायू ॥ नासिका या
॥ ४ ॥ ॐ जं ववर्ग वैवा गो धौ नमः पायू ॥ मुख ॥ ५ ॥ ॐ जं पवर्ग धौ लुया धौ नमः पायू
॥ क ॥ ६ ॥ ॐ जं यवर्ग वैवामू धौ नमः पायू ॥ हृदय ॥ ७ ॥ ॐ जं गवर्ग ममरान धौ न
मः पायू ॥ पाद या ॥ ८ ॥ ॐ जं वैवद काय नमः पायू ॥ गुच्छ ॥ ९ ॥ ॐ जं कं रुपा लाय नमः
पायू ॥ गिरा सि ॥ १० ॥ ॐ तिंदगस्तु नद रुया स धौ पूजा ॥ ॐ जं को को को को मानी आग रुद स्वा
हा ॥ आवा रुनी ॥ ॐ जं को मा धौ सनाय नमः पायू ॥ ॐ जं मराम यून सनाय नमः पायू ॥ ॥
वद्वार ॥ ॐ जं नंगल पतय पायू ॥ गुच्छ ॥ १० ॥ ३

ततावृद्धा पूजा

उयी जलिः २

पूनर्था नी ॥ ॐ मराम यून नति ॥ ॐ जं को को को को मानी मूर्क य धौ
नयूर्य नमः पायू ॥ ॐ जं को रुद याय नमः ॥ ॐ जं को गिरा स स्वाहा ॥ ॐ जं को गिरा ये यो
षट् ॥ ॐ जं कव वाय दू ॥ ॐ जं को नग राया वषट् ॥ ॐ जं अमुय रुद ॥ ॥ ज्ञाप ॥ ॐ जं स
त को को मा धौ नमः ॥ धौ न १०६ ॥ ॐ जं को को मानी वलि गृह्णस्वाहा ॥ नैव या दि धूप दी
पाने द र्ग यित्वा ॥ ॥ कातिलि पूजनी ॥ ॐ जं मंगल सनाय नमः पायू ॥ ॐ जं मंगल पत
आग रुद स्वाहा ॥ ॐ जं मंगल सनाय नमः पायू ॥ ॐ जं मंगल दयाय नमः ॥ ॐ जं गी
गिरा स स्वाहा ॥ ॐ जं मंगल वै रा ये योषट् ॥ ॐ जं मंगल कव वाय दू ॥ ॐ जं मंगल रुयाय वष
ट् ॥ ॐ जं मंगल अमुय रुद ॥ ॐ जं मंगल धौ मंगल सी दीप यो मा द वी दि श रुपा लाय वलि गृ
ह्णस्वाहा ॥ ॐ जं नव वत्या सनाय नमः पायू ॥ ॐ जं नवा सनाय नमः पायू ॥ ॐ जं कं रुपा लाय आ

जयास्तुती सिद्ध नसातु ॥ ॥ तता नव वलियूजा ॥ १

गङ्ग २ स्वाहा ॥ उं अं कौं कूं कृया लाय या पू ॥ उं अं कौं हृदयाय नमः ॥ उं अं कौं गिरि स स्वाहा ॥ उं अं कौं गि
 राये वीषट् ॥ उं अं कौं कूं कृवा यं ॥ उं अं कौं नृयाय वषट् ॥ उं अं कौं अम्नाय रुट् ॥ ॥ स्वः कृ
 वलि ४ ॥ उं अं कौं सर्व विष्टि कृत्य ४ सर्व कृत्य ४ कौ वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कौं कौं कूं कृया ला
 य कूं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कौं कूल पूज वट् कनाथ कौ वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कूं कूं सिद्धि या गि
 नीत्य ४ कूं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कूं विरु काय त्वं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कौं धा उग विष्टि मातृ कात्य २
 ४ कौ वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कूं स्वस्मान् कूं कृया लाय कूं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ उं अं कूं आत्म कूं कृया
 लाय आ वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ८ ॥ उं अं कौं कौं कूं कृया लाय कूं वलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ तर्पणार्क ॥
 रात्री ॥ स्नानं ॥ तृतिगी को मा र्थ च न विधि ४ समाप ४ ॥ ॥ को मा ग्री स्वधना दि पूजा ॥ ॥

वन्द्य सदा सकल
 जय ॥ स्नानं ॥ गीणासन वट् ॥ १